**ओ३म्**

**‘पाप से बचना है तो वेदों की ओर चलोः आचार्य धनंजय’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 रविवार दिनांक 1 अक्तूबर, 2017 को आर्यसमाज ग्राम डोभरी, देहरादून में सम्पन्न एक वृहद सभा व सत्संग में मुख्य प्रवचन आचार्य धनंजय जी का हुआ। आचार्य जी ने लगभग 1 माह तक डोभरी के निकटवर्ती ग्रामों के आठ माध्यमिक विद्यालयों व आर्यसमाज, डोभरी में आर्यवीर दल के व्यायामाचार्य श्री रूपेन्द्र आर्य द्वारा समाज के सहयोग से चलाये गये आर्यवीर दल के सफल प्रशिक्षण शिविरों का उल्लेख कर बताया कि ऐसे प्रयास पहले भी किये गये थे परन्तु वह आगे नहीं बढ़ पाये थे। इस बार हमने नई चेतना के साथ इस कार्य को आरम्भ किया। आचार्य धंनंजय जी ने छत्तीसगढ़ में जन्में व्यायामाचार्य श्री रूपेन्द्र आर्य की साधना व कार्यों की प्रशंसा की। आचार्य जी ने कहा कि संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है। शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति इसके अन्तर्गत आती हैं। महर्षि दयानन्द का उल्लेख कर उनके जन्म के समय देश की परिस्थितियों व ऋषि द्वारा किये गये कार्यों पर आचार्य जी ने प्रकाश डाला। आचार्य जी ने कहा कि ऋषि दयानन्द के सन् 1825 में जन्म के समय हम गुलाम थे। अंग्रेज हम पर उन दिनों राज्य कर रहे थे। आचार्य जी ने पूजा की चर्चा की और कहा कि मत-मतान्तरों के लोगों द्वारा धर्म और वेद के नाम पर पापाचार फैलाया गया है। छुआछूत की चर्चा कर आचार्य जी ने उसके दुष्परिणामों से अवगत कराया। इस छुआछूत के कारण ही हमारे बहुत से भाई मुसलमान और ईसाई बनते रहे हैं। आचार्य जी ने हिन्दुओं के धार्मिक नेताओं के व्यवहार पर आश्चर्य जताया। उन्होंने कहा कि आर्य जाति की अतीत में इतनी बड़ी हानि होने पर उन्होंने अपने मूर्खतापूर्ण विचारों व सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन व संशोधन नहीं किया। ऐसे विपरीत समय में ऋषि दयानन्द जी का आगमन हुआ। आचार्य धनंजय जी ने विदेशी मतों व उनकी धर्म पुस्तकों की चर्चा कर उनमें विद्यमान गपोड़ों का उल्लेख किया। उन्होंने मत-मतान्तरों की पूजा पद्धतियों के अधूरेपन की भी चर्चा की। ऋषि दयानन्द के समय में विभिन्न समुदायों मुख्यतः स्त्री व शूद्रों की शिक्षा की दयनीय स्थिति का भी आपने उल्लेख किया। **‘स्त्री पैरों की जूती है’** कहावत का उल्लेख कर उस पर भी दुःख जताया। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने स्वामी विरजानन्द जी से मथुरा में विद्याध्ययन कर आर्यसमाज की स्थापना की। आचार्य जी ने राम रहीम की चर्चा की और मीडिया द्वारा दिन में चार घंटे व इससे भी अधिक समय तक इसी कार्यक्रम को दिखानकर लोगों का समय बर्बाद करने के लिए आलोचना की। उन्होंने श्रोताओं को कहा कि पाप से बचना है तो वेदों की ओर चलो। आचार्य जी ने मिथ्या विश्वासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने धार्मिक प्रवर्त्तकों व उनके द्वारा प्रचलित मतों की मिथ्या बातों की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि यदि अज्ञान और मिथ्या बातों से बचना है तो वेदों की ओर लौटना होगा। विद्वान आचार्य डा. धनंजय ने कहा कि तिनके से लेकर ईश्वर तक का सत्य सत्य ज्ञान वेदों के अध्ययन से होता है। वेदों का अध्ययन व उसके अनुरूप आचरण ही जीवन का उद्देश्य है व इसी कार्य के लिए हमें ईश्वर से यह जीवन मिला है। आप वेदों का अध्ययन करेंगे तो आपको सभी सत्य विद्याओं का ज्ञान प्राप्त होगा। वेदों में भौतिक एवं आध्यात्मिक सभी प्रकार की विद्याओं का ज्ञान है।

 आचार्य डा. धनंजय ने कहा कि जो मनुष्य वेदों का ज्ञान रखते हुए श्रेष्ठ कार्य करता है वह आर्य कहलाता है। उसके आचार व व्यवहार सब श्रेष्ठ होते हैं। वह परोपकारी होता है। ऐसे श्रेष्ठ लोगों के संगठन का नाम ही आर्य समाज है। आर्यसमाज के 10 स्वर्णिम नियम हैं। एक नियम यह है कि संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। वेद-विज्ञ आचार्य धनंजय ने अन्य मतों की मान्यताओं की निस्सारता की चर्चा की। उन्होंने मत-मतान्तरों के आचार्यों की पाखण्डपूर्ण बातों की चर्चा भी की। बिग बास कार्यक्रम को उन्होंने युवाओं में मानसिक प्रदुषण फैलाने वाला बताया और कहा कि संसार का बिग बास तो केवल एक ईश्वर ही है। अन्य कोई संसार में बिग बास नहीं हो सकता। उन्होंने आगे कहा कि मनुष्य व प्राणी मात्र का उपकार करने वाली एक ही संस्था आयर्हसमाज है। आर्यसमाज को जानकर इसका अनुयायी बनने से मनुष्य की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति होती है। देश की आजादी में भी ऋषि दयानन्द और उनके अनुयायियों का सर्वाधिक योगदान है। ऋषि दयानन्द के अनुयायी क्रान्तिकारी और अंहिंसात्मक दोनों आन्दोलनों में बड़ी संख्या में सक्रिय रहे थे।

 आचार्य धनंजय जी ने कहा कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन रहता है। स्वस्थ शरीर के लोग ही अच्छे संकल्प लेकर उन्हें पूरा कर सकते हैं। सभी मनुष्यों को स्वास्थ्य के नियमों और व्यायाम द्वारा अपनी अपनी शारीरिक उन्नति अवश्य करनी चाहिये। उन्होंने आगे कहा कि बिना आत्मिक उन्नति के शारीरिक उन्नति का कोई महत्व नहीं है। उन्होंने सभागार में उपस्थित छात्र-छात्राओं सहित सभी लोगों को अपनी अपनी शारीरिक और आत्मिक उन्नति साथ साथ करने की सलाह दी। विद्यार्थियों को उन्होंने कहा कि आप आर्यसमाज में आकर पापों व दुराचरण से छूट जाओंगे व इन बुरी बातों से दूर रहोगे। विद्वान आचार्य ने कहा कि सत्य को जाने बिना मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास नहीं होता। व्यक्तित्व निर्माण के लिए आप सब सत्य के उपासक बनें। आचार्य जी को अनेक विद्यार्थियों ने कुछ प्रश्न भी दिये जिनका उन्होंने उत्तर दिया।

 एक प्रश्न था कि ईश्वर आंखों से दिखाई क्यों नहीं देता? आचार्य जी ने कहा कि संसार में ईश्वर के नाम पर धोखा हो रहा है। उन्होंने आर्यसमाज का दूसरा नियम पढ़कर सुनाया। दूसरा नियम है **‘‘ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।”** आचार्य जी ने कहा कि ईश्वर आनन्दस्वरूप और निराकार है। ईश्वर के अन्य गुणों का उल्लेख कर उन्होंने उन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आपने यदि ईश्वर के गुणों को जान लिया तो आपकी अविद्या दूर हो जायेगी। अवतारों, माताओं व अन्य भगवानों से विरक्ति हो जायेगी जो आपका जीवन बर्बाद करते हैं। आचार्य जी ने कहा कि ईश्वर सर्वव्यापक है। उन्होंने कहा कि यदि ईश्वर दीखता तो वह साकार होता। ईश्वर सर्वत्र व्यापक व सब जगह विद्यमान है। उन्होंने कहा कि निराकार, अत्यन्त सूक्ष्म और सर्वत्र व्यापक सत्ता के आंखों से दर्शन नहीं होते। ईश्वर की सर्वव्यापकता पर आचार्य जी ने विस्तार से प्रकांश डाला। आचार्य जी ने आगे कहा कि संसार में ऐसी अनेक सत्तयायें है जो आंखों से हमें दिखाई नहीं देती परन्तु उन्हें सभी लोग, धार्मिक व नास्तिक, मानते हैं। ऐसा ही ईश्वर भी है जो सर्वव्यापक व सर्वातिसूक्ष्म है। इसी कारण वह आंखों से दीखता नहीं है। निराकार सत्तायें भी आंखों से दीखती नहीं है। उन्होंने कहा कि हमारी प्रकृति व सृष्टि भी सूक्ष्म परमाणुओं से बनी है, उन परमाणुओं व मूल प्रकृति को भी हम व हमारे वैज्ञानिक आंखों से नहीं देख पातें। अतः ईश्वर की सत्ता है परन्तु आंखों की देखने की सीमा से भी सूक्ष्म होने के कारण वह आंखों से दीखता नहीं है।

 आचार्य धंनजय जी ने कहा कि ईश्वर जीवात्माओं के कर्मों का फल सुख व दुख देता है। वह सृष्टि को बनाता व उसका पालन करता है। आचार्य जी से यह प्रश्न भी किया गया कि क्या हिन्दू धर्म, सनातन धर्म और वैदिक धर्म एक है? आचार्य जी ने कहा कि जल का धर्म शीतलता और अग्नि का धर्म उष्णता, दाहकता व प्रकाश है। आकाश का गुण शब्द है। उन्होंने कहा कि जिसका जो मुख्य गुण है वही उसका धर्म भी है। गुणों को धारण करने से ही उसे धर्म कहते हैं। माता, पिता व गुरूओं का सम्मान करना सन्तान व विद्यार्थियों का धर्म है। जिसके द्वारा जो गुण व कर्तव्य धारण किये जाने होते हैं वही उसका धर्म होते हैं। सत्य व परोपकार को धारण करना भी सभी मनुष्यों का धर्म है। जिन्होंने पूर्ण सत्य को धारण नहीं किया है, अन्ध विश्वासों से युक्त हैं, ऐसे आचार्य और अनुयायी धार्मिक नहीं है। उन्होंने सनातन का अर्थ अनादि काल से होना बताया और कहा कि अनादि काल से वैदिक धर्म विद्यमान है, इस कारण यह दोनों एक हैं। आचार्य जी ने त्मसपहपवद का अर्थ मजहब बताया जो कि धर्म से अर्थ की दृष्टि से भिन्न है। उन्होंने चिकित्सकों व वकीलों की चर्चा की और कहा कि इनका धर्म निःस्वार्थ भाव से चिकित्सा करना व लोगों को न्याय दिलाना होता है। यदि ऐसा करते है तो धर्म का पालन होता है अन्यथा नहीं। यह एकांगी धर्म है। धर्म सर्वांगीण गुणों को कहते हैं जो सार्वभौमिक व सार्वकालिक होता है।

आचार्य धनंजय ने कहा कि सूर्य का धर्म ताप व प्रकाश देना है। सूर्य संसार के सब देशों में समान रूप से प्रकाश करता है। यह उसका धर्म है। संसार में धर्म का आरम्भ सुष्टि के आदि में वेद से हुआ है। अतः धर्म वेदों पर आधारित है और उसी को वैदिक धर्म कहते हैं जो पूर्णतया वेदों के अनुकूल व उस पर आधारित हो। विद्यार्थियों से प्रश्न करने पर एक विद्यार्थी ने पहले गीता, फिर महाभारत और उसके बाद राम चरित मानस को धर्मग्रन्थ बताया। आचार्य जी ने इसकी समीक्षा कर उसका उत्तर दिया। आचार्य जी ने विद्यार्थियों को कहा कि शरीर को स्वस्थ रखों और इसके लिए पूरी नींद लो। आचार्य जी ने विद्यार्थियों को रात्रि 10 बजे के बाद पढ़ाई न करने को कहा और सलाह दी कि यदि प्रातः 4 बजे उठकर पढ़गें तो आपको आपका पाठ शीघ्र याद हो जायेगा और इसके अनेक लाभ भी होंगे। उन्होंने उन्हें तामसिक भोजन कभी न करने की सलाह दी। इससे स्मरण शक्ति में वृद्धि होती है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को प्रातःकाल उषा वेला में जागरण तथा गायत्री मंत्र का अर्थ सहित पाठ करने की भी सलाह दी। विद्यार्थियों की ओर से एक प्रश्न था कि क्या ईश्वर मनुष्यों के पापों को क्षमा करता है या कोई अन्य धर्माचार्य आदि पाप क्षमा करा सकता है? इसका उत्तर भी आचार्य धनंजय जी ने दिया। आचार्य जी ने कहा कि ईश्वर दयालु भी है और न्यायकारी भी है। ईश्वर दयालु होने से हमसे स्नेह करता है और न्यायकारी होने से हमें पापों का दण्ड भी देता है। उन्होंने विद्यार्थियों को गुरु की दया और न्याय का उदाहरण भी दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य को अपने प्रत्येक शुभ व अशुभ कर्म के फलों को भोगना होता है। ईश्वर भोग कराता है जिसे सभी को भोगना ही पड़ता है। यदि पाप क्षमा होते तो उस मत का कोई अनुयायी रोगी न होता और न उनकी मृत्यु होती क्योंकि रोग से प्राप्त दुःख भी पाप के ही कारण होता है।

 आचार्य जी से यह प्रश्न भी किया गया कि हवन में जो घृत व पदार्थ डाले जाते हैं वह नष्ट हो जाते हैं। उन्हें यदि लोगों को खिलाया जाये तो वह अधिक उपयुक्त हो सकता है। आचार्य जी ने कहा कि संसार में वैज्ञानिक नियम है कि कोई भी पदार्थ नष्ट नहीं होता, उसका मात्र अवस्था परिवर्तन होता है। जल को गर्म करने से वह भाप बनता है परन्तु नष्ट नहीं होता और अनुकूल परिस्थितियों में पुनः जल बन जाता है। इसी प्रकार से यज्ञ में डाली गई आहुतियां सूक्ष्म होकर अधिक प्रभावशाली होती है और पूरे वातावरण में फैल कर मनुष्य व अन्य प्राणियों को लाभ देती है। वायु की शुद्धि भी यज्ञ से होती है और स्वास्थ्य पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ता। ऐसे अनेक लाभ यज्ञ करने से होते हैं। व्यायाम करना जरूरी है या पढ़ई करना? इसका उत्तर भी अनेक उदाहरणों से समझाया और कहा कि पढ़ाई तभी कर सकते हैं जब शरीर स्वस्थ हो। अतः पढ़ाई से पूर्व शरीर को स्वस्थ रखने के उपाये करने होंगे। उन्होंने कहा कि रोग न हो, उससे पूर्व ही शरीर को व्यायाम आदि से रोग के प्रभाव से मुक्त रखना चाहिये। उन्होंने कहा कि आधा घण्टे का योगाभ्यास आपको स्वस्थ रखेगा। एक प्रश्न किया गया कि आर्यसमाज धर्म कब से चला? आचार्य जी ने कहा कि आर्य सिद्धान्त सृष्टि में सृष्टि के आरम्भ से चल रहे हैं। यद्यपि आर्यसमाज की स्थापना ऋषि दयानन्द ने 10 अप्रैल, सन् 1875 को की परन्तु आर्य धर्म सृष्टि के आरम्भ से चल रहा है। अन्तिम प्रश्न था कि आर्यसमाज के सदस्य कैसे बन सकते हैं? इसके उत्तर में आचार्य धनंजय जी ने कहा कि आर्य सिद्धान्तों को जानकर व आर्यसमाज के सत्संगों में जाकर आर्यसमाज का सदस्य बन सकते हैं। इसी के साथ आर्यसमाज डोभरी में 8 माध्यमिक विद्यालयों के 400 बच्चों के आर्यवीर दल के प्रशिक्षण के प्रदर्शन के कार्यक्रम में आचार्य जी का उद्बोधन सम्पन्न हुआ। इसके बाद अन्य विद्वानों के प्रवचन व भजनादि अन्य कार्यक्रम हुए जिन्हें हम पूर्व लेख में प्रस्तुत कर चुके हैं। ओ३म् शम्।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**